Dr. Vinod Baitha
Deptt of Economics
Marwari college Darbhanga.

Economics D.I sub Lecture - 17

व्यापार-चक्र की प्रकृति

Nature of Business cycle

व्यापार-चक्र से हमारा अभिप्राय पूँजीवादी देशों में आर्थिक क्रियाओं के उन उतार-चढ़ाव से होता है जो पर्याप्त निश्चित अवधि के पश्चात बार-बार होते रहते हैं। विकसित देश अमेरिका व ब्रिटेन ने विगत दो शताब्दियों में महान आर्थिक प्रगति की है। परन्तु यह आर्थिक प्रगति विभिन्न आर्थिक उतार-चढ़ाव के साथ सम्पन्न हुई है। यद्यपि दोनों देशों में आर्थिक प्रगति के कारण राष्ट्रीय आय में दीर्घकालीन प्रवृत्ति बढ़ने की रही है। परन्तु विभिन्न वर्षों में राष्ट्रीय आय में उतार-चढ़ाव भी आते रहे हैं। इन आर्थिक उतार-चढ़ाव को ही व्यापार-चक्र कहते हैं। अतः व्यापारिक-चक्र अथवा आर्थिक उतार-चढ़ाव से हमारा तात्पर्य उत्पादन, आय, रोजगार और कीमतों में अल्पकालीन उतार-चढ़ाव या उच्चावचनों से है।

ऊँची आय अधिक उत्पादन और अधिक उत्पादन रोजगार के काल को समृद्धि का काल कहा जाता है। और कम आय कम उत्पादन तथा कम रोजगार के काल को मंदी का काल कहा जाता है। इन उतार-चढ़ाव की एक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि एक विशेष क्रम के साथ-साथ नियमानुसार होते हैं।

व्यापार-चक्र की कोई उचित परिभाषा देना सरल कार्य नहीं है आवश्यकता इस बात की है कि व्यापार-चक्र की कोई संक्षिप्त परिभाषा दी जाय जिसे की इस प्रकार के अन्य उतार-चढ़ाव से पृथक किया जा सके। आर्थिक अनुसंधान कार्यपीठ ने व्यापार-चक्र के क्षेत्र में अनेक अध्ययन के उपरान्त प्रसिद्ध अमेरिकी अर्थशास्त्री वेस्लेर मिचेल द्वारा दी गयी व्यापार-चक्र की परिभाषा को उपयुक्त बताया है।

व्यापार-चक्र की परिभाषा विभिन्न अर्थशास्त्रियों द्वारा दी गयी है जो निम्नलिखित है।

1. प्रो० मिचेल के अनुसार "व्यापार-चक्र इस प्रकार के उतार-चढ़ाव को कहते हैं जो विकसित व्यापार संगठन वाले समाजों की सम्पूर्ण आर्थिक क्रियाशीलता में पाए जाते हैं व्यापार-चक्र में सामान्य व्यापार चक्र की अवस्था में लगभग समान समय पर बहुत सी आर्थिक क्रियाशीलताओं विस्तार रहता है उसके बाद सामान्य सुस्ती, गिरावट तथा मंदी की अवस्था आ जाती है। जो अगले व्यापार-चक्र की विस्तार अवस्था में मिल जाती है। परिवर्तनों का यह चक्र आवर्तीय होता है। परन्तु यह सामयिक नहीं होता है।"

P.T.O

Scanned by CamScanner

2. अर्थशास्त्री कीन्स के अनुसार " व्यापार-चक्र से आशय अच्छे व्यापार समय जो बढ़ते हुए मूल्य एवं निम्न रोजगार प्रतिशत को बताता है, एवं इसके विपरित बुरे व्यापार समय जो गिरते मूल्य एवं ऊँचे रोजगार प्रतिशत द्वारा प्रदर्शित होता है से लगाया जाता है।"

3. हार्ट्रे के अनुसार " विशेष प्रकार के उच्चावचन व्यापार चक्र कहलाते हैं क्योंकि एक दिशा में अधिक गतिशीलता न केवल अपने उपचार ही प्रस्तुत करती है बल्कि दुसरी दिशा में गतिशीलता की आधिक्य को प्रोत्साहित करती हैं। "

4. हेबरलर के अनुसार " सामान्य अर्थों में व्यापार-चक्र को प्रगति काल या मंदी काल में अच्छे या बुरे व्यापार के अभाव के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। "

5. हेन्सन के अनुसार " व्यापार चक्र अर्थव्यवस्था के औद्योगिक ढाँचे का विशेष दर्पण है। जिसे उच्च स्तर संबंधित आधुनिक समाज में तेजी या मंदी अन्य समुदायों में पुनर्विनिद्रित होती रहती है। "

6. जे. टिन्बर्गन के अनुसार " व्यापार-चक्र उच्चावचनों के मध्य एक खेल है। और एक आर्थिक पद्धति इन उच्चावचनों के चाक्रिय समायोजित विस्तार के प्रदर्शित करने में सफल हो जाती है।"

7. प्रो० बेन्हम के अनुसार " व्यापार-चक्र वैभव एवं सम्पन्नता का एक ऐसा काल है जिसके पश्चात मंदी या अवसाद का आना स्वभाविक हो जाता है।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि व्यापार-चक्र से हमारा अभिप्राय पूंजीवादी देशों में आर्थिक क्रियाओं के उतार-चढाव से होता है जो पर्याप्त निश्चित अवधि के पश्चात बार-बार होते रहते हैं। संक्षेप में विस्तार की एक प्रावस्था तथा संकुचन की एक प्रावस्था को मिलाकर व्यापार-चक्र कहते हैं।

व्यापार-चक्र का प्रकार को निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत बाँटा जाता है।

1. प्रमुख-चक्र — यह-चक्र एक प्रमुख मंदी और प्रमुख प्रतिसार के बीच समांतर अथवा दूरी को बताते हैं।
2. लघु-चक्र — यह-चक्र व्यापारिक क्रिया में हल्के उतार चढाव को चक्र मानते हैं। प्रायः एक प्रमुख-चक्र में दो अथवा तीन लघु-चक्र होते हैं।
3. दीर्घ लहरें — इन्हें एक दुसरे अर्थशास्त्री निकोलाई डी कोंड्रेटीफ के नाम से कॉन्ड्रेटिफ चक्र कहते हैं जो व्यापार चक्रों को दीर्घकालीन लहरों को बताते हैं।
4. निर्माण कार्य-चक्र — ये चक्र निर्माण कार्य से संबंधित होते हैं इस प्रकार के चक्र की अवधि 15-20 वर्ष की होती है।

इस प्रकार व्यापार-चक्र हम इन सभी प्रकार से जानते हैं।

Scanned by CamScanner